Chapter- 6

मदर टेरेसा

STUDY NOTES

MIND MAP

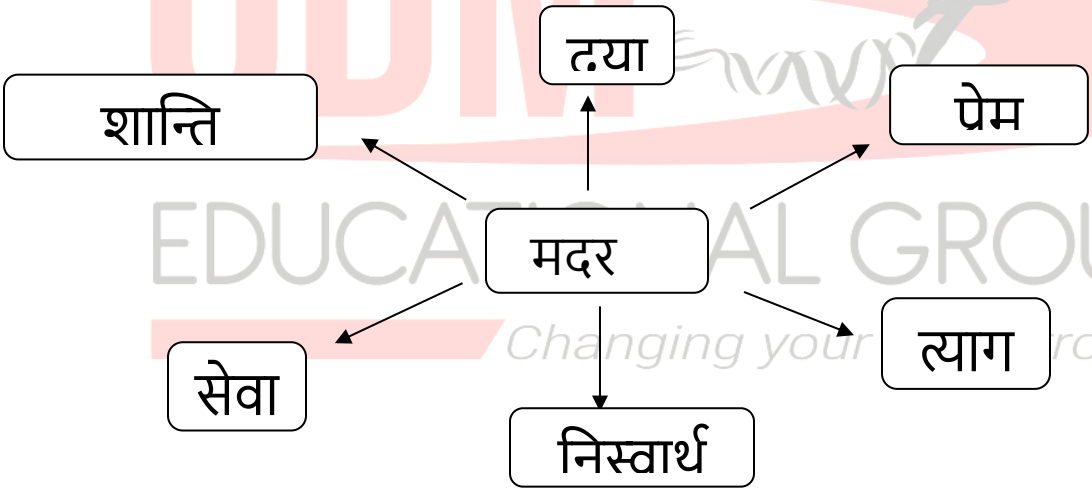

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your tomorrow

पाठ प्रवेश-

कहते हैं दुनिया में अपने लिए तो सब जीते हैं, लेकिन जो दूसरों के लिए कार्य करता है,वहीं महान कहलाता है।ऐसे व्यक्तियों का जीवन प्रेरणादायक होता है।ऐसी ही महान आत्मा थीं मदर टेरेसा। इनके बचपन का नाम 'अगनेस गोंझा बोयाजिजू' था। मदर टेरेसा दया, प्रेम,त्याग और निस्वार्थ भाव की प्रतिमूर्ति थीं। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दीन- दरिद्र, बीमार, लाचार और असहाय लोगों की सेवा में न्योछावर कर दिया। परोपकार की भावना उनके मन में भरा था।ऊंच - नीच और अमीर - गरीब में भेदभाव न करते हुए उन्होंने दीन- हीन दुखियों और अनाथों की सेवा की है।

सारांश

ममता और सेवा की साक्षात मूर्ति मदर टेरेसा के जीवन- चरित्र का वर्णन कर उनकी विशेषताओं का चित्रण किया गया है।१८ वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने अपना जीवन दीन- हीन अनाथों की सेवा में समर्पित कर दिया।ये लारेंटो कॉन्वेंट में अध्यापिका बनकर भारत आईं।बाद में प्रधानाध्यापिका नियुक्त हुईं। सन् १९४६ में दार्जिलिंग में मानव- सेवा करने का संकल्प लिया।अपना सारा जीवन- दुखियों, गरीबों,अपाहिजों,कोढ़ियों आदि की सेवा में लगा दिया। कोलकाता में अनेक शिक्षा केन्द्र, कुष्ठ रोग चिकित्सा- केंद्र, भोजनालय तथा असहाय बूढ़ों को

सहला देने के लिए पहला ' निर्मल हृदय होम' स्थापित किए। इन्हें शान्ति पुरस्कार, पद्मश्री,नोबल पुरस्कार तथा भारत रत्न से विभूषित किया गया। महारानी एलिज़ाबेथ ने मदर टेरेसा को भारत में ही' आर्डर- ऑफ मेरिट' की उपाधि दी।५ सितंबर,१९९७को ये स्वर्ग- सिधार गई। इनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसे पूरा करना मुश्किल है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow